भारत रत्न पंडित गोविन्द बल्लभ पंत

प्रधानमंत्री संयुक्त प्रान्त, सन् 1937 से 1939
मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश, सन् 1946 से 1954
गृहमंत्री भारत सरकार, सन् 1955 से 1961

जन्म-10 सितम्बर, 1887
पुण्य तिथि-7 मार्च, 1961

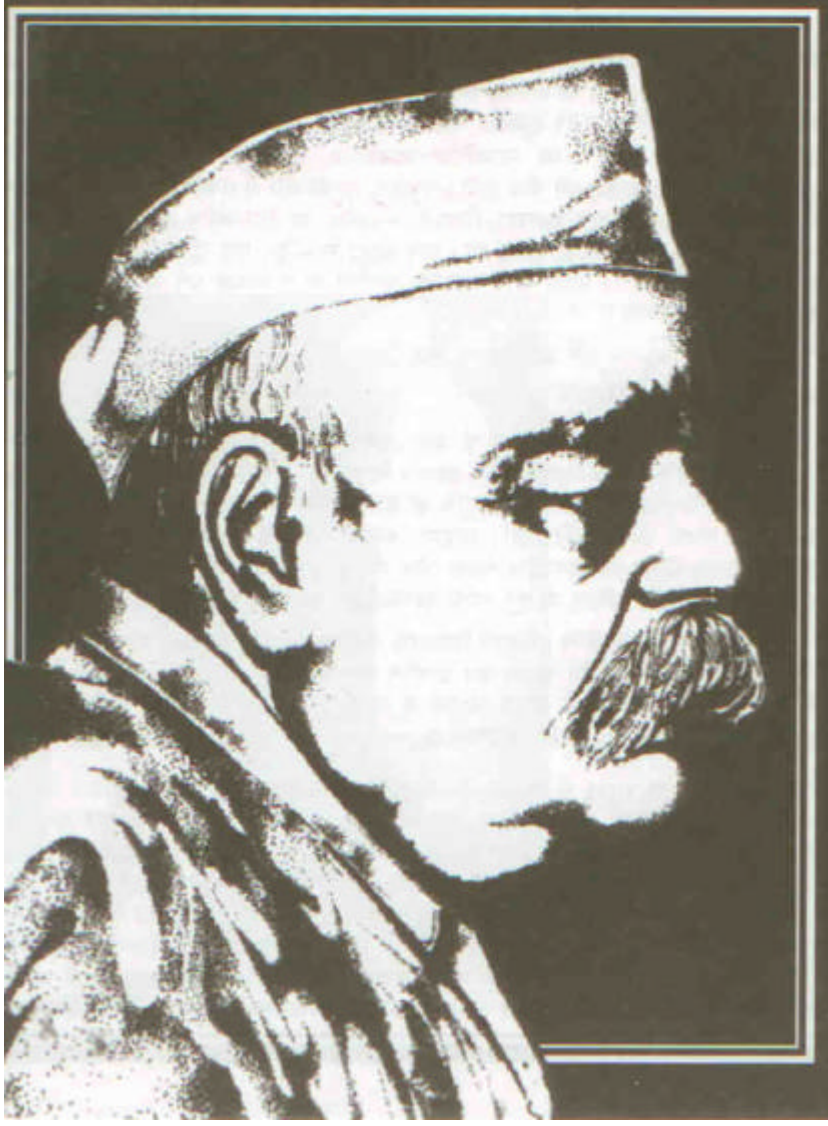

पंडित गोविन्द बल्लभ पंत

कुमाऊं पर्वत श्रेणी में स्थित अल्मोड़ा के ग्राम खूंट में पंडित गोविन्द बल्लभ पंत जी का जन्म 10 सितम्बर, 1887 में हुआ। पंडित पंत जी का विद्यार्थी जीवन प्रतिभाशाली था। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से सन् 1909 में कानून में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की। युवा विद्यार्थी के रूप में उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सन् 1905 में हुए बनारस के सम्मेलन में भाग लिया। अल्मोड़ा में उनका फलता–फूलता कानूनी व्यवसाय था। महात्मा गांधी के आह्वान पर उन्होंने अपना यह व्यवसाय छोड़ दिया और युवावस्था में ही सक्रिय राजनीति में पूर्ण रूप से कूद पड़े।

प्रान्तीय और राष्ट्रीय राजनीति में प्रवेश से पहले पंत जी बुनियादी तौर पर कुमाऊं प्रभाग के सामाजिक क्षेत्र अल्मोड़ा, नैनीताल और काशीपुर में बहुत सक्रिय रहे। काशीपुर अधिसूचित क्षेत्रीय समिति के सदस्य निर्वाचित हुए। वे शिक्षा समिति के तथा जिला बोर्ड नैनीताल के भी अध्यक्ष रहे। कुमाऊं परिषद कोटद्वार के भी वे सचिव निर्वाचित हुए। उन्होंने उदयराज हिन्दू उच्च माध्यमिक पाठशाला, काशीपुर तथा प्रेमसभा (नागरी प्रचारिणी सभा की शाखा) की नींव रखी। उन्होंने पहाड़ी क्षेत्र में प्रचलित कुली बेगार प्रथा के विरूद्ध सफल अभियान चलाया, जिसके अन्तर्गत स्थानीय गरीब लोगों के बेगार के रूप में कुली का काम करना पड़ता था। सन् 1923 में पंडित पंत जी उत्तर प्रदेश विधान परिषद के सदस्य बने। पहले वे उत्तरप्रदेश कांग्रेस के उपाध्यक्ष बने और बाद में सन् 1927 में उसके अध्यक्ष।

"पंडित गोविन्द बल्लभ पंत कठिनाइयों की परवाह न कर समर्पण की भावना से कार्य करते रहे। वे सदैव आशावादी रहे"। - **डा0 राजेन्द्र प्रसाद**

पंडित पंत जी के सामाजिक जीवन के बड़े आकर्षक पहलू हैं। उनमें से एक है, पंडित जवाहरलाल नेहरू जी के साथ उनकी अंतरंग मित्रता और पारिवारिक स्नेह सम्बन्ध। यह ऐसा स्नेह बन्धन था जो अपनी मातृभूमि के प्रति असीम प्रेम में कंधे से कंधा मिलाकर उठाये गये कष्टों पर आधारित था। साइमन कमीशन के 19 नवम्बर, 1928 में लखनऊ आने के समय पंडित जवाहरलाल नेहरू और पंडित पंत जी ने कमीशन के बहिष्कार में जुलूस निकाला और पुलिस के क्रूर लाठी आघातों का सामना किया।

"वह हिमालय के पर्वतपुत्र थे। जिनमें हिमालय जैसी शांति और चट्टान की तरह अडिग, जनता के पथ प्रदर्शक थे। संसद को उन्होंने अपनी प्रतिभा से आलोकित कर दिया। लेकिन इससे भी अधिक वे अपने जीवन में आलोकित हुये। वे अपनी मातृभूमि, और उसकी प्रगति के प्रति पूर्ण रूपेण समर्पित थे।" - **जवाहर लाल नेहरू**

पंडित पंत जी सन् 1931 में कांग्रेस कार्यकारिणी के सदस्य बने और मृत्युपर्यंत उसके सदस्य रहे। वे कांग्रेस संसदीय दल के भी सदस्य थे। सन् 1934 में उनको केन्द्रीय विधान सभा के लिए चुना गया और कांग्रेस दल के उप नेता बनाये गये। जब कांग्रेस ने सन् 1937 में राज्यभार सम्भाला तो वे उत्तरप्रदेश विधान सभा में कांग्रेस पार्टी के नेता चुने गये और राज्य के पहले प्रधानमंत्री बने। (उन दिनों प्रान्तीय मुख्यमंत्री को प्रधानमंत्री ही कहा जाता था)। दो वर्ष के अल्प समय में ही पंत जी ने बहु आवश्यक हरिजन उद्धार तथा अस्पृश्यता निवारण आदि सुधारों का काम किया, जिससे गरीब और निम्नवर्गों के लोगों को काफी राहत मिली। पंडित पंत जी पहले नमक सत्याग्रह आन्दोलन के सिलसिले में

सन् 1930 में गिरफ्तार हुए और उन्हें छः महीने की सजा हुई। वे पुनः 1932 में असहयोग आन्दोलन में गिरफ्तार हुए। बाद में व्यक्तिगत सत्याग्रह आन्दोलन में सन् 1940 में जेल गये और अंत में वे भारत छोड़ो आन्दोलन के सिलसिले में सन् 1942 में गिरफ्तार हुए।

सन् 1945 में रिहाई के बाद पंत जी ने कांग्रेस की ओर से ब्रिटिश सरकार से भारत की आजादी के लिए बातचीत में एक प्रमुख भूमिका निभाई। पंडित पंत जी ने अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की 14 जून, 1947 में हुई एक बैठक में एक एतिहासिक प्रस्ताव रखा, जिसका अनुमोदन पंडित जवाहरलाल नेहरू और सरदार पटेल ने किया। जिसके परिणाम स्वरूप भारत का बंटवारा हो कर भारतीय स्वतंत्रता कानून ब्रिटिश संसद में पारित किया गया।

पंत जी पुनः उत्तरप्रदेश विधान सभा में सन् 1946 में निर्वाचित हुए और पुनः राज्य की बागडोर सम्भालने के लिए उनसे कहा गया। उन्होंने लगातार आठ वर्षों तक उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री का पद ग्रहण किया। स्वर्गीय श्री लाल बहादुर शास्त्री उनके संसदीय सचिव थे।

"पंतजी का अपना ही एक अद्वितीय स्थान था। उनकी उपलब्धियां चतुर्दिव है। वह राजनीति में कुशाग्रा, प्रशासन में कारगर और संसद में प्रतिभाशाली थे। उनका जीवन जनता की सेवा में पूर्ण रूपेण समर्पित था।" – **लाल बहादुर शास्त्री**

वे दिसम्बर सन् 1954 में केन्द्रीय सरकार में गृहमंत्री के रूप में आए वे इस भारी उत्तरदायित्व वाले उच्च पद पर मृत्युपर्यंत बने रहे। इस बीच वे राज्य सभा के सदस्य रहे और सदन के नेता भी।

देश के प्रति की गई उनकी अनन्य सेवाओं के लिए उन्हें सन् 1957 में भारत रत्न की उपाधि से अलंकृत किया गया। राष्ट्र के सार्वजनिक जीवन में दी जाने वाली यह उच्चतम पदवी है।

20 फरवरी सन् 1961 में जब वे सरकारी काम में व्यस्त थे, उन्हें दिल का दौरा पड़ा और उन्होंने हमेशा के लिए अपनी चेतना खो दी और 7 मार्च, 1961 को उनका देहान्त हो गया।

"प्यारा दोस्त और साथी, स्वतंत्रता संग्राम आन्दोलन में हमारे देश का महान नायक, स्वतंत्रता संग्राम के बाद एक महान् राजनीतिक नेता, हमारे प्यारे हिमालय की चोटी का सुपुत्र, जिसमें हिमालय की शांति, गम्भीरता, चट्टान जैसी स्थिरता और जन–मानस का प्रकाश स्तम्भ और मार्ग दर्शक थे। कैसे हम उनकी क्षति पूर्ति कर सकेंगे और हमें कैसे उन जैसा महान नेता दोबारा मिल सकेगा।"

देश के सामाजिक एवं राजनीति के जीवन में पंडित गोविन्द बल्लभ पंत जी का विशाल व्यक्तित्व पचास वर्षों तक छाया रहा। लगभग तीस वर्षो तक वे माहात्मा गांधी जी की परम्परा में चोटी के कांग्रेसी नेताओं में से एक थे। वे कांग्रेस की नीति निर्धारण करने वाली उच्चतम समितियों के सदस्य रहे और अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी तथा इसकी कार्यकारिणी द्वारा लिए गये सभी महत्वपूर्ण निर्णयों में उनका महान् योगदान रहा। अस्वस्थ होने के बावजूद भी कांग्रेस के प्रति पूर्ण समपर्ण जनता–जनार्दन की सेवा में अविचलित योगदान और अपने कर्त्तव्य के प्रति पूर्णनिष्ठा ही उन्हें अग्रणी देशभक्तों की श्रेणी में ला खड़ा करती है। एक कुशल वक्ता और सांसद विज्ञ के युगल गुणों में उनकी कोई बराबरी नहीं थी। उनकी सेवा का योगदान विपक्ष के नेता के रूप में अथवा सरकार में अद्वितीय रहा है।

"हम केवल यही याद कर सकते हैं कि उन्होंने हमारे लिए और हमारे देश के लिए क्या किया। उन्होंने हमारे लिए ऐसे उदाहरण छोड़े है जिसका यदि हम विवेकपूर्ण अनुसरण करें तो हम निःसंदेह अपने जीवन को समृद्धशाली बना सकेंगे।" – **मोराजी देसाई**

आज जबकि देश की एकता और अखण्डता को गहरी चुनौती है, पंडित पंत जी के वे शब्द आज भी उतने ही सामयिक है, जितने कि कुछ दशक पहले उनके द्वारा कहे गये थे। संसद में अपने एक वक्तव्य में महाराष्ट्र और गुजरात के अलग–अलग राज्य बनाये जाने के प्रस्ताव पर बोलते हुए उन्होंने कहा था, "मैं यह नहीं कह सकता कि मानवीय मामलों में जो कुछ भी किया जाता है वह निश्चित रूप से श्रेष्ठ ही होगा। हमारे देश ने अनेक राष्ट्रों के परिवार तथा अन्य स्थानों में एक ऊंचा स्थान प्राप्त किया है और अपनी एकता और मूलभूत जीवन के मूल्यों को बनाये रखने में सफल हुआ है। क्योंकि सांस्कृतिक और अन्य विविधताओं के बावजूद भी हमारी आत्मा की आवाज ने उस मित्रता के प्रेमबंधन को बनाये रखा है, जो वर्षों से हमारे आपस के संपर्कों में पनपा है। उसे और आगे बढ़ाना चाहिए और ऐसा कुछ नहीं करना चाहिए, जिससे उसमें बाधा पड़े। यह हमारी विरासत है, सहिष्णुता की, दूसरे के पक्ष को महत्व देने की, आवश्यक अनुसरण की, और यदि आवश्यक हो तो भाईचारे के नाते त्याग भी करने की .... ।।"

पंडित पंत जी के जन्म दिवस समारोह तभी सार्थक होंगे, जब हम उनकी स्मृति में इस महान विरासत को सुरक्षित रखेंगे। उनके द्वारा दर्शाये गये महान् आदर्शों को कार्यरूप में परिणित करने का संकल्प लेंगे।

xkfoUn cYyHk ir eekfj;y lklkbVh ¼ithdr½] 20 & ,y
Cykd] dUnh; lfpoky;] ub fnYyh d lktU; lA